सूत्र से 'णिच्=इ' का लोप करके = चोरकः।

ण्यत् प्रत्यय

ऋहलोर्ण्यत् (३.१.१२४) - ऋकारान्त तथा हलन्त धातुओं से भाव तथा कर्म अर्थ में ण्यत् प्रत्यय होता है।

ओरावश्यके (३.१.१२४) - आवश्यक अर्थ होने पर उवर्णान्त धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है। (हमने जाना कि ण्यत् प्रत्यय सारे धातुओं से नहीं लगता है। केवल ऋकारान्त तथा हलन्त धातुओं से ही लगता है। आवश्यक अर्थ में उवर्णान्त धातुओं से भी लगता है।)

ण् की इत् संज्ञा होने से यह णित् प्रत्यय है। **अतः इस प्रत्यय के लगने पर अङ्ग को वे सारे कार्य होंगे जो ञित्, णित् प्रत्यय परे होने पर कहे गये हैं। यथा -**

उवर्णान्त धातु - लू + ण्यत् > 'चुटू' सूत्र से ण् की तथा 'हलन्त्यम्' सूत्र से त् की इत् संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' सूत्र से दोनों का लोप करके > लू + य > 'अचो ञ्णिति' से वृद्धि करके > लौ + य - 'धातोस्तन्निमित्तस्यैव' सूत्र से औ को आव् आदेश करके > लाव् + य = लाव्यम् (काटने योग्य)। इसी प्रकार - पू + ण्यत् - पाव्यम्। आ + सु + ण्यत् = आसाव्यम्। यु + ण्यत् = याव्यम्, आदि बनाइये।

ऋकारान्त धातु - कृ + ण्यत् > 'अचो ञ्णिति' सूत्र से वृद्धि करके > कार् + य - कार्यम्। इसी प्रकार हृ + ण्यत् = हार्यम् आदि बनाइये।

हलन्त धातु -

यज् + ण्यत् > 'चुटू' सूत्र से ण् की तथा 'हलन्त्यम्' सूत्र से त् की इत् संज्ञा करके 'तस्य लोपः' सूत्र से दोनों का लोप करके > यज् + य > 'अत उपधायाः' सूत्र से अङ्ग की उपधा के 'अ' को वृद्धि करके > याज् + य - याज्य > याज्य + सु = याज्यम्।

पच् + ण्यत् > पच् + य >

चजोः कु घिण्ण्यतोः - चकारान्त और जकारान्त धातुओं को कुत्व अर्थात् कवर्ग होता है, घित् तथा ण्यत् प्रत्यय परे होने पर।

इस सूत्र से च् को कुत्व करके पक् + य > 'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा के 'अ' को वृद्धि होकर > पाक् + य = पाक्यम्।

वच् + ण्यत् > 'अत उपधायाः' से अ को वृद्धि होकर > वाच् + य -

वचोऽशब्दसंज्ञायाम् - वच् धातु से ण्यत् प्रत्यय परे होने पर, शब्दसंज्ञा अर्थ में वच् धातु को कुत्व होता है। वाक् + य = वाक्यम्।

शब्दसंज्ञा अर्थ न होने पर, वच् धातु को कुत्व न होकर - वाच्यम्।

यत् प्रत्यय

अचो यत् (३.१.९७) - अजन्त धातुओं से भाव, कर्म अर्थ में यत् प्रत्यय होता है।

आकारान्त धातुओं से यत् प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

पा + यत् > 'हलन्त्यम्' सूत्र से त् की इत् संज्ञा करके > पा + य >

ईद्यति - यत् प्रत्यय परे होने पर धातु के अन्तिम 'आ' को 'ई' आदेश होता है। पा + यत् > पी + य > अन्तिम ई को 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण करके > पे + य = पेय / पेय + सु = पेयम् (पीने योग्य)।

एजन्त धातुओं से यत् प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

गै + यत् > 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्र से ऐ को आ आदेश करके > गा + य > ईद्यति सूत्र से 'आ' को 'ई' आदेश करके > गी + य > अन्तिम ई को 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण करके > गे + य > गेय + सु = गेयम् (गाने योग्य)।

इकारान्त, ईकारान्त धातुओं से यत् प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

जि + यत् > इ को 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण करके > जे + य = जेय > जेयम् (जीतने योग्य)। इसी प्रकार - नी + यत् = नेयम् आदि, (ले जाने योग्य)।

उकारान्त, ऊकारान्त धातुओं से यत् प्रत्यय इस प्रकार लगाइये -

हु + यत् > अन्तिम उ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण करके > हो + य >

धातोस्तन्निमित्तस्यैव (६.१.८०) - यकारादि प्रत्यय को निमित्त मानकर बने हुए जो ओ, औ, उन्हें क्रमशः अव्, आव् आदेश होते हैं।

हु + य > हो + य > हव् + य = हव्यम् (हवि देने योग्य)। इसी प्रकार -

लू + यत् > अन्तिम उ को सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से गुण करके > लो + य > धातोस्तन्निमित्तस्यैव सूत्र से ओ को अव् आदेश करके > लव् + य = लव्यम्।

यद्यपि अजन्त धातुओं से यत् और हलन्त धातुओं से ण्यत् प्रत्यय का विधान है, किन्तु अपवाद बनकर इन हलन्त धातुओं से भी यत् प्रत्यय होता है -

हलन्त धातु -

पोरदुपधात् - (३.१.९८) - जिनकी उपधा में ह्रस्व अकार है, ऐसे पवर्गान्त धातुओं से भाव तथा कर्म अर्थ में यत् प्रत्यय होता है।

उदाहरण - शप् + यत् = शप्यम् (शाप के योग्य) / जप् + यत् = जप्यम् (जपने योग्य) / लभ् + यत् = लभ्यम् (प्राप्त करने योग्य)। रभ् + यत् = रभ्यम् (आरम्भ करने योग्य) / गम् + यत् = गम्यम् (जाने योग्य)।

शकिसहोश्च - (३.१.९९) - शक्लृ शक्तौ और षह मर्षणे धातुओं से भाव तथा कर्म अर्थ में यत् प्रत्यय होता है। जैसे - शक्तुं योग्यं शक्यम् - शक् + यत् - शक्यम् (जो

सकने योग्य) / सोढुं योग्यं सह्यम् - सह् + यत् - सह्यम् (सहने योग्य)।

गदमदचरयमश्चानुपसर्गे - (३.१.१००) - अनुपसर्ग गद धातु, मदी हर्षे, चर गतिभक्षणयोः, यम उपरमे, धातुओं से भी भाव तथा कर्म अर्थ में यत् प्रत्यय होता है। गदितुं योग्यं गद्यम् - गद् + यत् - गद्यम् (बोलने योग्य) / मद् + यत् - मद्यम् (हर्ष करने योग्य) / चर् + यत् - चर्यम् (खाने योग्य) / यम् + यत् - यम्यम् (नियमन करने योग्य)।

ध्यान रहे कि इन धातुओं में उपसर्ग होने पर ण्यत् प्रत्यय ही होगा - प्र + गद् + ण्यत् - प्रगाद्यम्। प्र + मद् + ण्यत् - प्रमाद्यम्। प्र + चर् + ण्यत् - प्रचार्यम्।